IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

आजमगढ़ जिले में शहरी क्षेत्र के बुजुर्गों की सामाजिक स्थिति पर एक अध्ययन

शालू सिंह[1]

डॉ सविता सांगवान[2]

[1]रिसर्च स्कॉलर

[2]ऐसोसिएट प्रोफेसर, गृह विज्ञान विभाग

श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबड़ेवाला विश्वविद्यालय

चुड़ेला, झुंझुनूं, राजस्थान

सारांश :

इस अध्ययन का उद्देश्य उत्तरप्रदेश राज्य के आजमगढ़ जिले में शहरी क्षेत्र में रहने वाले बुजुर्ग पुरुष एवं महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना है। उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों के महत्व को समझते हुए, अधिकांश सामाजिक विज्ञान शोध सामाजिक घटना की व्याख्या उनके व्यापक सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में करते हैं। एक व्यक्ति एक वर्ग है और वर्ग चेतना और उस वर्ग की जीवन शैली का प्रतिनिधित्व करता है जिससे वह संबंधित है। हाल के सामाजिक विज्ञान की सोच, इस तरह के एक नियतात्मक दृष्टिकोण का पालन किए बिना, दृढता से विश्वास करती है कि सामाजिक व्यवहार काफी हद तक सामाजिक–सांस्कृतिक का एक उत्पाद है। अध्ययन में 100 उत्तरदाताओं का चयन स्तरीकृत नमूना तकनीक का उपयोग करके किया गया है। अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि अधिकांश बुजुर्ग अपनी सामाजिक स्थिति से संतुष्ट हैं वहीं कुछ अपने रहने की व्यवस्था सें संतुष्ट नहीं थे जबकि अधिकांश अपनी वृद्धावस्था को अच्छा मानते है।

कीवर्ड : वद्धावस्था समस्याऐं, सामाजिक स्थिति, वृद्धावस्था, पुरूष, महिला, आजमगढ़, शहरी क्षेत्र।

परिचय

वृद्धावस्था को एक सामान्य, अपरिहार्य, जैविक घटना के रूप में माना जाना चाहिए। दुनिया की आबादी बूढी हो रही है। 2025 तक, दुनिया की आबादी में 65 वर्ष की आयु में 830 मिलियन से अधिक लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। 65 की जनसंख्या का प्रतिशत विकसित देशों (WHO जिनेवा, 1992) में सबसे अधिक होगा, लेकिन विकासशील देशों में पूर्ण संख्या अधिक होगी। चीन और भारत जैसे विकासशील देशों की कुल आबादी सबसे अधिक है, और बुजुर्गों की सबसे बडी संख्या बनी रहेगी। तुलनात्मक रूप से युवा आबादी के साथ, भारत अभी भी दुनिया में वृद्ध व्यक्तियों की दूसरी सबसे बडी संख्या का घर बनने की ओर अग्रसर है।

जनसंख्या का वृद्ध होना जनसांख्यिकीय संक्रमण का एक महत्वपूर्ण उत्पाद है (भारत की जनगणना 1991: रिपोर्ट, नई दिल्ली)। भारत में वृद्ध व्यक्तियों का अनुपात 1901 में 4.9 प्रतिशत से बढकर 1951 में 5.5 प्रतिशत, 1991 में 6.5 प्रतिशत, 2001 में 7.7 प्रतिशत और 2025 में 12 प्रतिशत हो जाएगा (विनोद कुमार, 2003)। मानव दीर्घायु में वृद्धि (वर्तमान

में देश में 64 वर्ष) ने स्वास्थ्य और सेवाओं की अधिक अपेक्षा को जन्म दिया है, जिससे वृद्धावस्था में स्वास्थ्य और रोग के विभिन्न पहलुओं और सामाजिक और आर्थिक सेवाएं प्रदान करने में नवाचारों पर जोरदार शोध की आवश्यकता है।

अधिकांश सामाजिक विज्ञान अनुसंधान उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति जैसे सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों के महत्व को ध्यान में रखते हुए, उनके व्यापक सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ में सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करते हैं। एमिल दुर्खीम से लेकर आज तक सामाजिक तथ्यों की समाजशास्त्रीय समझ में अनुभवजन्य अनुसंधान में सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि कारकों पर महत्वपूर्ण ध्यान दिया गया है। सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों के महत्व को समाजशास्त्रियों के साथ–साथ मानवविज्ञानी, मनोवैज्ञानिक, अर्थशास्त्री और राजनीतिक वैज्ञानिकों ने भी स्वीकार किया है। मार्क्सवादियों और अन्य नियतिवादी विचारकों ने सभी मानव व्यवहार को वर्ग संरचना के संदर्भ में समझाने का प्रयास किया। उसके लिए, एक व्यक्ति एक वर्ग है, और एक वर्ग उस वर्ग की चेतना और जीवन शैली है जिससे वह संबंधित है। इस तरह के नियतिवादी दृष्टिकोण को अपनाए बिना, समकालीन सामाजिक विज्ञान सोच इस बात पर अडी हुई है कि सामाजिक व्यवहार काफी हद तक एक सामाजिक–सांस्कृतिक निर्माण है।

उत्तरदाताओं के सामाजिक आर्थिक लक्षणों का वर्णन करना आवश्यक है क्योंकि सामाजिक आर्थिक स्थिति का जीवनकाल और जीवन स्तर पर सीधा असर पडता है। परिणामस्वरूप, इस अध्याय में उत्तरदाताओं की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

कालानुक्रमिक आयु यह मापने का एक तरीका है कि कोई व्यक्ति शारीरिक और मनोवैज्ञानिक रूप से कितना पुराना है। यह पूरी कहानी नहीं बताती है कि वास्तव में कोई कैसे बूढा हो रहा है। उम्र बढने के तीन आयाम हैं – 1. शारीरिक, 2. मनोवैज्ञानिक और 3. सामाजिक। ये आयाम एक दूसरे से संबंधित हैं, और प्रत्येक अन्य दो को प्रभावित करता है।

अध्ययन विधियां एवं आंकड़ा संग्रहण

अध्ययन के लिए नमूने एक स्तरीकृत नमूना पद्धति का उपयोग करके चुने गए थे। उत्तर प्रदेश के आजमगढ़ जिले में वृद्ध महिलाओं की स्वास्थ्य स्थिति और स्वास्थ्य देखभाल प्राथमिकताओं को बेहतर ढंग से समझने के लिए, यह अध्ययन एक सार्थक प्रयास है। बुजुर्गों के सामने आने वाली सामाजिक–आर्थिक कठिनाइयों की भी जांच की गई है। यह जानकारी आजमगढ़ शहर में रहने वाली 60 वर्ष से अधिक आयु के 100 बुजुर्ग उत्तरदाताओं से जुटाई गई थी। 100 उत्तरदाताओं में से 50 महिला एवं 50 पुरुष उत्तरदाता थे जिनका चयन अध्ययन के लिये किया गया था। उत्तरदाताओं से डेटा एक उद्देश्यपूर्ण नमूनाकरण तकनीक का उपयोग करके एकत्र किया गया था।

परिणाम और चर्चा

समय सीमा में जीव के विकास को समझने में आयु एक महत्वपूर्ण चर है। मनुष्यों के बीच उम्र परिपक्वता के स्तर, मानसिक स्वभाव और आसपास के सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश के प्रति बातचीत/प्रतिक्रियाओं के लिए एक संदर्भ बिंदु के रूप में कार्य करती है। हालांकि उम्र एक जैविक निर्माण है जो कालानुक्रमिक क्रम में मानव के शारीरिक और मानसिक विकास को मापता है, फिर भी, संदर्भ के सामाजिक–सांस्कृतिक ढांचे के संदर्भ में एक अधिक महत्वपूर्ण श्रेणी है।

तालिका संख्या 1 – उत्तरदाताओं की आयु

आयु वर्ग	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
60–65	18	36	20	40
65–70	26	52	22	44
70–75	4	8	6	12
75 से अधिक	2	4	2	4
कुल	50	100	50	100

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि कुल 100 उत्तरदाताओं में से 52 प्रतिशत पुरुष एवं 44 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं की उम्र 65 से 70 वर्ष के बीच है। वहीं 36 प्रतिशत बुजुर्ग पुरुष एवं 40 प्रतिशत बुजुर्ग महिला उत्तरदाता 60–65 वर्ष की आयु के हैं, 8 प्रतिशत पुरुष एवं 12 प्रतिशत महिला उत्तरदाता 70–75 वर्ष की आयु के हैं, और 75 और उससे अधिक वर्ष की आयु के पुरुष एवं महिला उत्तरदाता समान रुप से 4 प्रतिशत हैं। अतः तालिका सं निष्कर्ष निकलता है कि चयनित बुजुर्ग उत्तरदाताओं का बडा वर्ग ऐसा है जिसकी आयु 60 से 70 वर्ष के बीच है।

अधिक आय श्रेणी में महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों की संख्या अधिक है। 30000 से अधिक कुल पारिवारिक मासिक आय वालों में पुरूष उत्तरदाताओं की संख्या जहां 36 प्रतिशत है वहीं महिला उत्तरदाताओं की संख्या केवल 18 प्रतिशत

ही है। इसके विपरीत 10000 से कम आय श्रेणी में महिलाओं (25 प्रतिशत) की तुलना में पुरुष (13 प्रतिशत) उत्तरदाताओं की संख्या कम है। अर्थात् दोनों जिलों में महिलाओं की अपेक्षा पुरुष उत्तरदाताओं की आमदनी अधिक है अर्थात् वो अधिक कमाते हैं।

तालिका संख्या 2 – उत्तरदाताओं की मासिक पारिवारिक आय

पारिवारिक आय	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
<= 10000	6	12	12	24
10001 से 20000	10	20	14	28
20001 से 30000	22	44	10	20
30001 से 40000	8	12	8	16
40000 से अधिक	4	8	6	12
कुल	50	100	50	100

बुजुर्गों के रहने की व्यवस्था

पुराने जमाने में रहने के लिए अलग कमरे की सुविधा बेहद आराम और गोपनीयता देती है। इसलिए, हमने अपने उत्तरदाताओं से यह जानने की कोशिश की है कि क्या उनके पास अपने और अपने जीवनसाथी के लिए अलग रहने का कमरा है। यह देखा जा सकता है कि 70 प्रतिशत पुरूष एवं 52 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं के पास रहने के लिए अलग कमरा है, जबकि उनमें से 30 प्रतिशत पुरूष एवं 48 प्रतिशत महिला उत्तरदाताओं के पास रहने के लिए अलग कमरा नहीं है। अतः तालिका से यह भी स्पष्ट है कि महिलाओं की अपेक्षा पुरूष उत्तरदाताओं के पास रहने के लिये अलग कमरे की व्यवस्था थी। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वृद्धावस्था में अधिकांश उत्तरदाताओं के पास रहने के लिए अलग कमरा नहीं है। इससे उनके लिए कुछ कठिनाई पैदा होने की संभावना है। आराम और सुविधा प्रदान करने के अलावा, आवास शारीरिक सुरक्षा भी प्रदान करता है जिसकी वृद्ध लोगों को आवश्यकता होती है। बुजुर्ग लोगों को भी घर के अंदर थोडे एकांत की आवश्यकता होती है ताकि वे कुछ अकेले समय बिता सकें। बुजुर्ग लोगों के पास रहने की जगह के रूप में उपयोग करने के लिए अपना निजी शयनकक्ष, कमरा या अन्य क्षेत्र हो सकता है।

तालिका संख्या 3 – उत्तरदाताओं के रहने की अलग व्यवस्था एवं संतुष्टि

अलग कमरे की व्यवस्था है?	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
हां	35	70	26	52
नहीं	15	30	24	48
क्या अपने रहने की व्यवस्था से संतुष्ट हैं				
हां	38	76	30	60
नहीं	12	24	20	40
कुल	50	100	50	100

उपरोक्त तालिका संख्या 3 से स्पष्ट है कि 76 प्रतिशत पुरूष एवं 60 प्रतिशत महिला उत्तरदाता अपने रहने की व्यवस्था से संतुष्ट दिखाई देते हैं जबकि 24 प्रतिशत पुरूष एवं 40 प्रतिशत महिला बुजुर्ग उत्तरदाता अपने रहने की व्यवस्था से असंतुष्ट दिखे। यहां भी पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं में अपने रहने की व्यवस्था से संतुष्टि का अभाव था।

पारिवारिक कार्यों में भागीदारी

तालिका संख्या 4 – उत्तरदाताओं की पारिवारिक कार्यों में भागीदारी

पारिवारिक कार्यों में भागीदारी रखते है?	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
हां	32	64	34	68
नहीं	4	8	2	4
कभी–कभीं	14	28	14	28

उत्तरदाताओं का लिंग के अनुसार वितरण बताता है कि महिला बुजुर्गों (68 प्रतिशत) का एक बडा अनुपात उनके पुरुष समकक्षों (64 प्रतिशत) की तुलना में पारिवारिक गतिविधियों में भाग लेता है। 28 प्रतिशत पुरूष एवं 28 प्रतिशत महिला बुजुर्ग पारिवारिक कार्यों में कभी–कभी भागीदारी लेते है। यह घरेलू मामलों में उनकी सक्रिय भूमिका के कारण है। जबकि केवल 8 प्रतिशत पुरूष एवं 4 प्रतिशत महिला बुजुर्ग उत्तरदाता पारिवारिक गतिविधियों में भाग नहीं लेते।

उत्तरदाताओं का वृद्धावस्था के प्रति दृष्टिकोण

वृद्धों की समस्याओं का विश्लेषण किया गया है और परिणाम नीचे तालिका में प्रस्तुत किया गया है। समस्या की गंभीरता की पहचान करने के लिए पांच–बिंदु स्केलिंग पद्धति का उपयोग किया गया था। वृद्धों की समस्याएँ उनकी सामाजिक आर्थिक और स्वास्थ्य स्थिति से संबंधित हैं।

तालिका संख्या 5 – उत्तरदाताओं की बुढ़ापे के प्रति सोच

बुढ़ापा कैसा बीत रहा है?	पुरुष	प्रतिशत	महिला	प्रतिशत
खुश	10	20	16	32
संतुष्ट	24	48	20	40
कुछ हद तक ठीक	13	26	8	16
सही नहीं/खींच रहे हैं	3	6	6	12

उपरोक्त तालिका के अध्ययन के अनुसार, पुरुषों (48 प्रतिशत) की तुलना में महिलाएं (40 प्रतिशत) हैं जो अपनी वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हैं। 20 प्रतिशत पुरूष एवं 32 प्रतिशत महिला उत्तरदाता अपने बुढ़ापे की स्थिति से खुश थे। वहीं 26 प्रतिशत पुरूष एवं 16 प्रतिशत महिला बुजुर्ग पूर्णतः संतुष्ट नहीं दिखे एवं कुछ हद तक संतुष्टि जाहिर की है। केवल 6 प्रतिशत पुरूष एवं 12 प्रतिशत महिला बुजुर्ग कहते हैं कि उनका बुढ़ापा सही नही बीत रहा एवं केवल जिंदगी को खीच रहे हैं। अक्सर देखा जाता है कि महिलाओं को रोजमर्रा की जिंदगी में रियायतें देनी पडती हैं, शायद यह बताता है कि वे पुरुषों की तुलना में अधिक संतुष्ट महसूस क्यों करती हैं। 36 प्रतिशत महिलाओं की तुलना में, 48 प्रतिशत वृद्ध पुरुष अपने जीवन से अधिक संतुष्ट और खुश महसूस करते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन उन मुद्दों पर प्रकाश डालता है जिनका वृद्ध लोग सामना करते हैं और इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि मुख्य रूप से सामाजिक व्यवस्था इसके लिए जिम्मेदार है। इसके अतिरिक्त, उम्र, जाति, शिक्षा, वैवाहिक स्थिति आदि जैसे अन्य कारक भी बुजुर्गों के साथ कैसे व्यवहार किया जाता है, इस पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं। हमें उनकी समस्याओं का समाधान करने के लिए जनसंख्या की जनसांख्यिकी का विश्लेषण करने के अलावा और भी बहुत कुछ करना चाहिए। हालाँकि, इस जनसांख्यिकीय अध्ययन के परिणामों के आलोक में बुजुर्गों की स्थिति में सुधार की भविष्य की योजनाएँ बनाई जा सकती हैं। जनसांख्यिकीय अध्ययन उनके जटिल मुद्दों को पकडने में असमर्थ हैं, इसलिए उनका निरीक्षण करने के लिए अधिक गहन जांच की तत्काल आवश्यकता है। प्रदान किए गए जनसांख्यिकीय अध्ययन के अनुसार, बुजुर्गों की आबादी में पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक हैं। स्वाभाविक रूप से, कमजोर लिंग से संबंधित होने के कारण वृद्ध महिलाओं को दूसरों पर बढती निर्भरता के कारण अधिक चुनौतियों का सामना करना पडता है। इन्हें सुरक्षा के साथ–साथ अधिक देखभाल की भी जरूरत होती है। समाज के हर क्षेत्र में आवास को दैनिक जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू माना जाता है। पुरुष और महिला दोनों बुजुर्गों की भलाई उनके शुरुआती वर्षों में उनके भौतिक वातावरण से काफी प्रभावित होती है। डेटा विश्लेषण के अनुसार, वरिष्ठ नागरिकों का एक बडा प्रतिशत अपनी जीवन स्थितियों से संतुष्ट है। असंतोष का मुख्य कारण गोपनीयता की कमी, अपर्याप्त स्थान और जीवन की खराब गुणवत्ता है। वरिष्ठ नागरिकों को भावनात्मक समर्थन प्रदान करने के अलावा, इन तीन क्षेत्रों में सबसे अधिक सुधार की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. **अभय बी. माने (2016),** "भारत में एजिंगः बुजुर्गों की देखभाल के लिए कुछ सामाजिक चुनौतियां", Journal of Gerontology & Research, Vol-5, Issue-2, ISSN-2167-7182,
2. **अपराजिता दासगुप्ता, तानिया पान व अन्य (2018),** "पश्चिमी बंगाल के एक ग्रामीण क्षेत्र में बुजुर्गों के जीवन की गुणवत्तवः एक समुदाय आधारित अध्ययन", मेडिकल जर्नल, वॉल्युम–11, न.–6, पेज न. 527–531, DOI: 10.4103/mjdrdypu.mjdrdypu_78_18
3. **अनंतरामन, आर.एन. (1979बी)**। "दो पीढियों द्वारा वृद्धावस्था की धारणा" जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल रिसर्च, 23 (3), पेज–198–199
4. **अर्चना सिंह एवं निशि मिश्रा (2009),** "वृद्धावस्था में अकेलापन, अवसाद और सामाजिकता", नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन, doi: 10.4103/0972-6748.57861.
5. **दांडेकर, के. (1997)**. "वृद्ध, उनकी समस्याएं, सामाजिक हस्तक्षेप और महाराष्ट्र के लिए भविष्य का दृष्टिकोण" ए.एस. कोहली (संपा.), समाज कल्याण नई दिल्लीः
6. **इरुदया राजन, एस. (2000).** "वृद्धावस्था में वित्तीय और सामाजिक सुरक्षा" एम.देसाई और एस.शिव राजू (संपा.), जेरोन्टोलॉजिकल सोशल वर्क इन इंडिया। दिल्लीः बी.आर. प्रकाशन निगम।
7. **सत्यमाला, सी, एट अल (2012),** "स्वास्थ्य पर सार्वजनिक रिपोर्ट कुछ प्रमुख निष्कर्ष और नीति सिफारिशें।" इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली.वॉल्यूम. 47, अंकं. 21. पृ. 43–55.
8. **मोनिका रिखी और एन.के. चड्ढा (2004).** "बुजुर्गों के सामाजिक समर्थन से संबंधित मुद्दों में अनुभवजन्य अनुसंधान की स्थिति" जेरोन्टोलॉजी के भारतीय जूनियर। टवस.18, छव.2, पेज 237–264।
9. **वी.राजागोपाल (2017),** "वृद्धाश्रम जीवन के एक तथ्य के रूप में–बुजुर्गों के लिए सुविधाओं की बढती संख्या के कुछ पहलुओं पर एक नजर।", द.हिंदु अखबार में 20 अगस्त 2017 को प्रकाशित।